नया कानून

सआदत हसन मंटो (1912-1955)

मंटो ने कुल 43 वर्ष के जीवन काल में अनेक विवादास्पद, चर्चित और विशिष्ट कहानियाँ लिखीं । उनके लेखन से उर्दू साहित्य में यथार्थवाद का एक नया दौर शुरू हुआ । उनकी चेतना पर भारत-पाक विभाजन का तीखा असर पड़ा । उनकी अनेक ऐसी कहानियाँ 'स्याह हाशिये' नामक कहानी संग्रह में मिलती हैं । 'खोल दो', 'टोबा टेकसिंह', 'हतक', 'लाइसेंस', 'काली सलवार' मंटो की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं । सन् 47 में विभाजन के समय मंटो पाकिस्तान चले गए ।

मंगू कोचवान अपने अड्डे में बहुत अक्लमंद आदमी समझा जाता था, हालाँकि उसकी शिक्षा शून्य के बराबर थी और उसने कभी स्कूल का मुँह भी नहीं देखा था । लेकिन इसके बावजूद उसे दुनिया भर की बातों का पता था । अड्डे के वे सारे कोचवान, जिनको यह जानने की इच्छा होती थी कि दुनिया के अंदर क्या हो रहा है, उस्ताद मंगू की विस्तृत जानकारी से फायदा उठाने के लिए उसके पास जाते थे ।

पिछले दिनों, जब उस्ताद मंगू ने अपनी एक सवारी से स्पेन में जंग छिड़ जाने की अफवाह सुनी थी तो उसने गामा चौधरी के चौड़े कंधे पर थपकी दे कर, ज्ञानियों के-से अंदाज में पेशगोई की थी, 'देख लेना चौधरी, थोड़े ही दिनों में स्पेन के अंदर जंग छिड़ जाएगी ।'

और जब गामा चौधरी ने उससे यह पूछा था कि यह स्पेन कहाँ पर है तो उस्ताद मंगू ने बड़ी गंभीरता से जवाब दिया था, 'विलायत में, और कहाँ ?'

स्पेन में जंग छिड़ी और जब हर आदमी को इसका पता चल गया तो स्टेशन के अड्डे में जितने कोचवान घेरा बनाए, हुक्का पी रहे थे, मन-ही-मन में उस्ताद मंगू की 'महानता' स्वीकार कर रहे थे और उस्ताद मंगू उस समय माल रोड की चमकीली सड़क पर ताँगा चलाते हुए, अपनी

सवारी से ताजा हिंदू-मुस्लिम फसाद पर 'विचार-विनिमय' कर रहा था ।

उस दिन, शाम के करीब, जब वह अड्डे में आया तो उसका चेहरा गैर-मामूली तौर पर तमतमाया हुआ था । हुक्के का दौर चलते-चलते, जब हिंदू-मुस्लिम दंगे की बात छिड़ी तो उस्ताद मंगू ने सिर पर से खाकी पगड़ी उतारी और बगल में दाब कर, बड़े 'विचारकों' के-से अंदाज में कहा – 'यह किसी पीर की बद-दुआ का नतीजा है कि आए दिन हिंदुओं और मुसलमानों में चाकू-छूरियाँ चलते रहते हैं और मैंने अपने बड़ों से सुना है कि अकबर बादशाह ने किसी दरवेश का दिल दुखाया था और उस दरवेश ने जल कर यह बद-दुआ दी – जा, तेरे हिंदुस्तान में हमेशा फसाद ही होते रहेंगे ।...और देख लो, जब से अकबर बादशाह का राज खतम हुआ है, हिंदुस्तान में फसाद-पर-फसाद होते रहते हैं ।' यह कह कर उसने ठंडी साँस भरी और हुक्के का दम लगा कर अपनी बात कहनी शुरू की, 'ये काँग्रेसी हिंदुस्तान को आजाद कराना चाहते हैं । मैं कहता हूँ, अगर ये लोग हजार साल भी सिर पटकते रहें तो कुछ न होगा । बड़ी-से-बड़ी बात यह होगी कि अंग्रेज चला जाएगा और कोई इटली वाला आ जाएगा ; या वह रूस वाला, जिसके बारे में मैंने सुना है कि वह बहुत तगड़ा आदमी है । लेकिन हिंदुस्तान सदा गुलाम रहेगा । हाँ, मैं यह कहना भूल ही गया कि पीर ने यह बद-दुआ भी दी थी कि हिंदुस्तान पर हमेशा बाहर के आदमी राज करते रहेंगे ।'

उस्ताद मंगू को अंग्रेजों से बड़ी नफरत थी । इस नफरत का कारण वह यह बतलाया करता था कि वे उसके हिंदुस्तान पर अपना सिक्का चलाते हैं और तरह-तरह के जुल्म ढाते हैं । मगर उसकी नफरत की सबसे बड़ी वजह यह थी कि छावनी के गोरे उसे बहुत सताया करते थे । वे उसके साथ ऐसा बर्ताव करते थे, जैसे वह एक जलील कुत्ता हो । इसके अलावा उसे उनका रंग भी बिलकुल पसंद न था । जब कभी वह किसी गोरे के सुर्ख-सफेद चेहरे को देखता तो उसे मतली-सी आ जाती, न जाने क्यों । वह कहा करता था कि उनके लाल झुर्रियों-से भरे चेहरे को देख कर, उसे वह लाश याद आ जाती है, जिसके जिस्म पर से ऊपर की झिल्ली गल-गल कर झड़ रही हो ।

जब किसी शराबी गोरे से उसका झगड़ा हो जाता तो सारा दिन उसकी तबियत नाखुश रहती और वह शाम को अड्डे में आ कर, लैंप मार्का सिगरेट पीते, या हुक्के के कश लगाते हुए, उस गोरे को जी भर के सुनाया करता ।

मोटी-सी गाली देने के बाद वह ढीली पगड़ी समेत अपने सिर को झटका दे कर कहा करता था-'आग लेने आए थे । अब घर के मालिक ही बन गए हैं । नाक में दम कर रखा है इन बंदरों की औलाद ने । ऐसे रोब गाँठते हैं, जैसे हम उनके बाबा के नौकर हों.....'

इस पर भी उसका गुस्सा ठंडा नहीं होता था । जब तक उसका कोई साथी उसके पास बैठा रहता, वह अपने सीने की आग उगलता रहता ।

'शक्ल देखते हो न तुम उसकी...जैसे कोढ़ हो रहा है ।....बिलकुल मुर्दार-एक धप्पे की मार । और गिट-पिट, गिट-पिट, यों बक रहा था, जैसे मार ही डालेगा । तेरी जान की कसम, पहले-पहल जी में आया कि साले की खोपड़ी के पुर्जे उड़ा दूँ, लेकिन इस ख्याल से टाल गया कि इस मरदूद को मारना भी अपनी हतक है ।'...यह कहते-कहते वह थोड़ी देर के लिए खामोश हो जाता और नाक को खाकी कमीज की आस्तीन से साफ करने के बाद फिर बड़बड़ाने लग जाता ।

'कसम है भगवान की, इन लाट साहबों के नाज उठाते-उठाते तंग आ गया हूँ । जब कभी इनका मनहूस चेहरा देखता हूँ, रगों में खून खौलने लग जाता है । कोई नया कानून-वानून बने तो इन लोगों से छुटकारा मिले । तेरी कसम, जान-में-जान आ जाए ।'

और जब एक दिन उस्ताद मंगू ने कचहरी से अपने ताँगे पर दो सवारियाँ लादीं और उनकी बातों से उसे पता चला कि हिंदुस्तान में नया कानून लागू होने वाला है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा ।

दो मारवाड़ी, जो कचहरी में अपने दीवानी के मुकदमे के सिलसिले में आए थे, वापस घर जाते हुए, नए कानून यानी 'इंडिया ऐक्ट' के बारे में बातें कर रहे थे ।

'सुना है कि पहली अप्रैल से हिंदुस्तान में नया कानून चलेगा ?....क्या हर चीज बदल जाएगी ?'

'हर चीज तो नहीं बदलेगी, मगर कहते हैं कि बहुत कुछ बदल जाएगा और हिंदुस्तानियों को आजादी मिल जाएगी ।'

'क्या ब्याज के बारे में भी कोई नया कानून पास होगा ?'

'यह पूछने की बात है । कल किसी वकील से पूछेंगे ।'

उन मारवाड़ियों की बातचीत उस्ताद मंगू के दिल में नाकाबिले-बयान खुशी पैदा कर रही थी । वह अपने घोड़े को हमेशा गालियाँ देता था और चाबुक से बहुत बुरी तरह पीटा करता था, पर उस दिन वह बार-बार पीछे मुड़ कर, मारवाड़ियों की तरफ देखता और अपनी बढ़ी हुई मूँछों के बाल, एक उँगली से बड़ी सफाई के साथ ऊँचे कर के, घोड़े की पीठ पर लगाम ढीली करते हुए, बड़े प्यार से कहता–'चल बेटा, चल बेटा....जरा हवा से बातें करके दिखा दे ।'

मारवाड़ियों को उनके ठिकाने पहुँचा कर, उसने अनारकली में दीनू हलवाई की दुकान पर आध सेर दही की लस्सी पी कर, एक बड़ी डकार ली और मूँछों को मुँह में दबा कर उनको चूसते हुए, यों ही ऊँची आवाज में कहा – 'हत् तेरी ऐसी-की-तैसी ।'

शाम को, जब वह अड्डे पर लौटा और वहाँ उसे अपना कोई जानू-पहचानू ताँगे वाला न मिल सका तो उसके सीने में एक अजीबो-गरीब तूफान बरपा हो गया । आज वह एक बड़ी

खबर अपने दोस्तों को सुनाने वाला था–बहुत बड़ी खबर । और उस खबर को अपने अंदर से बाहर निकालने के लिए, वह बहुत बेचैन हो रहा था । लेकिन वहाँ कोई था ही नहीं ।

आधे घंटे तक वह चाबुक बगल में दबाए, स्टेशन के अड्डे की लोहे की छत के नीचे, बेचैनी की हालत में टहलता रहा । उसके दिमाग में बड़े अच्छे-अच्छे 'विचार' आ रहे थे । नए कानून के लागू होने की खबर ने उसको एक नई दुनिया में ला कर खड़ा कर दिया था । वह उस नए कानून के बारे में, जो पहली अप्रैल को हिंदुस्तान में लागू होने वाला था, अपने दिमाग की तमाम बत्तियाँ रौशन कर के, 'सोच-विचार' कर रहा था । उसके कानों में मारवाड़ी का यह अंदेशा–क्या ब्याज के बारे में भी कोई नया कानून पास होगा – बार-बार गूँज रहा था और उसके पूरे शरीर में खुशी की एक लहर दौड़ा रहा था । कई बार, अपनी घनी मूँछों के अंदर हँस कर, उसने उन मारवाड़ियों को गाली दी-'गरीब की खटिया में घुसे हुए खटमल ! नया कानून इनके लिए खौलता हुआ पानी होगा ।'

वह बेहद खुश था । खासकर उस समय उसके मन को बड़ी ठंडक पहुँचती, जब वह सोचता कि इन गोरों-सफेद चूहों (वह उनको इसी नाम से याद करता था) की थूथनियाँ, नए कानून के आते ही, बिलों में हमेशा-हमेशा के लिए गायब हो जाएँगी Https://www.evidyarthi.in/

जब नत्थू गंजा, पगड़ी बगल में दबाए, अड्डे में दाखिल हुआ तो उस्ताद मंगू बढ़ कर उससे मिला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर, ऊँची आवाज में कहने लगा–'ला हाथ इधर ! ऐसी खबर सुनाऊँ कि तेरा जी खुश हो जाए ! तेरी इस गंजी खोपड़ी पर बाल उग आएँ ।'

और यह कह कर मंगू ने बड़े मजे ले-ले कर नए कानून के बारे में अपने दोस्त से बातें शुरू कर दीं । बातों के दौरान उसने कई बार नत्थू गंजे के हाथ पर जोर से अपना हाथ मार कर कहा-'तू देखता रह, क्या बनता है ! यह रूस वाला बादशाह कुछ-न-कुछ जरूर करके रहेगा ।'

उस्ताद मंगू मौजूदा सोवियत रूस की समाजवादी सरगर्मियों के बारे में बहुत कुछ सुन चुका था और उसे वहाँ के नए कानून और दूसरी नई चीजें बहुत पसंद थीं । इसीलिए उसने 'रूस वाले बादशाह' को 'इंडिया ऐक्ट' –यानी नए विधान के साथ मिला दिया और पहली अप्रैल को पुराने निजाम में जो नई फेर-बदल होने वाली थी, वह उसे 'रूस वाले बादशाह' के असर का नतीजा समझता था ।

कुछ अर्से से पेशावर और दूसरे शहरों में, सुर्खपोशों (गफ्फार खाँ के खुदाई खिदमतगारों) का आंदोलन चल रहा था । उस्ताद मंगू ने उस आंदोलन को अपने दिमाग में 'रूस वाले बादशाह' और फिर नए कानून के साथ खल्त-मल्त कर दिया था । इसके अलावा, जब कभी वह किसी से सुनता कि अमुक शहर में इतने बम बनाने वाले पकड़े गए हैं या फलाँ जगह, इतने आदमियों पर बगावत के इल्जाम में मुकदमा चलाया गया है तो वह इन सारी घटनाओं को नए कानून की

पूर्व-सूचना समझता था और मन-ही-मन बहुत खुश होता था ।

एक दिन उसके ताँगे में बैठे दो बैरिस्टर, नए विधान की बहुत कड़ी आलोचना कर रहे थे और वह खामोशी से उनकी बातें सुन रहा था । उनमें से एक, दूसरे से कह रहा था – 'नए कानून का दूसरा हिस्सा फेडरेशन है, जो मेरी समझ में अभी तक नहीं आया । ऐसा फेडरेशन दुनिया की तारीख में आज तक न सुना, न देखा गया है । सियासी नजरिए से भी यह फेडरेशन बिलकुल गलत है, बल्कि यों कहना चाहिए कि यह फेडरेशन है ही नहीं ।'

उन बैरिस्टरों के बीच जो बातचीत हुई, क्योंकि उसमें ज्यादातर शब्द अंग्रेजी के थे, इसलिए उस्ताद मंगू, सिर्फ ऊपर के जुमले को ही किसी कदर समझ पाया और उसने ख्याल किया, ये लोग हिंदुस्तान में नए कानून के आने को बुरा समझते हैं और नहीं चाहते कि इनका वतन आजाद हो । चुनांचे इस ख्याल के असर में उसने कई बार उन दो बैरिस्टरों को हिकारत भरी नजर से देख कर, मन-ही-मन कहा–'टोडी बच्चे !'

जब कभी वह किसी को दबी जबान में 'टोडी बच्चा' कहता, तो दिल में यह महसूस करके खुश होता था कि उसने इस नाम को सही जगह इस्तेमाल किया है और यह कि उसमें शरीफ आदमी और 'टोडी बच्चे' में फर्क करने की 'योग्यता' है ।

इस घटना के तीसरे दिन वह गवर्नमेंट कॉलेज के तीन विद्यार्थियों को अपने ताँगे में बैठा कर मजंग जा रहा था कि उसने तीनों लड़कों को आपस में ये बातें करते सुना – 'नए कानून ने मेरी उम्मीदें बढ़ा दी हैं, अगर '–' साहब एसेंबली के मेंबर हो गए तो किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी जरूर मिल जाएगी ।'

'वैसे भी बहुत-सी जगहें और निकलेंगी । शायद इसी गड़बड़ में हमारे हाथ भी कुछ आ जाए ।'

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं ।'

'वे बेकार ग्रैजुएट, जो मारे-मारे फिर रहे हैं, उनमें कुछ तो कमी होगी ।'

इस बातचीत ने उस्ताद मंगू के दिल में नए कानून का महत्त्व और भी बढ़ा दिया और वह उसको ऐसी चीज समझने लगा, जो बहुत चमकती हो । 'नया कानून.....।' वह दिन में कई बार सोचता, 'यानी कोई नई चीज ।' और हर बार उसकी नजरों के सामने अपने घोड़े का वह नया साज आ जाता, जो उसने दो बरस हुए, चौधरी खुदा बख्श से, बड़ी अच्छी तरह ठोंक-बजा कर खरीदा था । उस साज पर, जब वह नया था, जगह-जगह लोहे की निकल चढ़ी हुई कीलें चमकती थीं और जहाँ-जहाँ पीतल का काम था, वह तो सोने की तरह चमकता था । इस लिहाज से भी 'नए कानून' का चमकता-दमकता होना जरूरी था ।

पहली अप्रैल तक उस्ताद मंगू ने नए विधान के पक्ष और विपक्ष में बहुत कुछ सुना ।

पर उसके बारे में जो खाका वह अपने मन में बना चुका था, उसे वह बदल न सका । वह समझता था कि पहली अप्रैल को नए कानून के आते ही सब मामला साफ हो जाएगा और उसको विश्वास था कि उसके आने पर जो चीजें नजर आएँगी, उनसे उसकी आँखों को जरूर ठंडक पहुँचेगी ।

आखिर मार्च के इकतीस दिन खत्म हो गए और अप्रैल के शुरू होने में रात के चंद खामोश घंटे बाकी रह गए । मौसम आम दिनों की बनिस्बत ठंडा था और हवा में ताजगी थी ।

पहली अप्रैल को सुबह-सवेरे उस्ताद मंगू उठा और अस्तबल में जा कर उसने ताँगे में घोड़े को जोता और बाहर निकल गया । उसकी तबियत आज असाधारण रूप से प्रसन्न थी ।.....वह आज नए कानून को देखने वाला था ।

उसने सुबह के सर्द धुँधलके में, कई तंग और खुले बाजारों का चक्कर लगाया, मगर उसे हर चीज पुरानी नजर आई । आसमान की तरह पुरानी । उसकी निगाहें आज खास तौर पर नया रंग देखना चाहती थीं, पर सिवाय उस कलगी के, जो रंग-बिरंगे परों से बनी थी और उसके घोड़े के सिर पर जमी हुई थी, बाकी सब चीजें पुरानी नजर आती थीं । यह नई कलगी उसने नए कानून की खुशी में इकतीस मार्च को चौधरी खुदा बख्श से साढ़े चौदह आने में खरीदी थी ।

घोड़े के टापों की आवाज ; काली सड़क और उसके आस-पास थोड़ा-थोड़ा फासला छोड़ कर लगाए हुए बिजली के खंभे ; दुकानों के बोर्ड ; उसके घोड़े के गले में पड़े हुए घुँघरुओं की झनझनाहट; बाजार में चलते-फिरते आदमी–इनमें कौन-सी चीज नई थी ? जाहिर है कि कोई भी नहीं ! लेकिन उस्ताद मंगू निराश नहीं हुआ ।

'अभी बहुत सबेरा है । दुकानें भी तो सब-की-सब बंद हैं ।' इस ख्याल ने उसे तसकीन दी । इसके अलावा, वह यह भी सोचता था, 'हाईकोर्ट में तो नौ बजे के बाद ही काम शुरू होता है । अब इससे पहले नया कानून क्या नजर आएगा ?'

जब उसका ताँगा गवर्नमेंट कॉलेज के दरवाजे के करीब पहुँचा तो कॉलेज के घड़ियाल ने बड़े घमंड से नौ बजाए । जो विद्यार्थी कॉलेज के बड़े दरवाजे से बाहर निकल रहे थे, खुश-पोश थे, पर उस्ताद मंगू को न जाने क्यों उनके कपड़े मैले-मैले-से नजर आए । शायद इसका कारण यह था कि उसकी निगाहें आज आँखों को चौंधिया देने वाले किसी जलवे का इंतजार कर रही थीं ।

ताँगे को दाएँ हाथ मोड़ कर, वह थोड़ी देर के बाद फिर अनारकली में चला आया । बाजार की आधी दुकानें खुल चुकी थीं और अब लोगों की आमद-रफ्त भी बढ़ गई थी । हलवाई की दुकानों पर ग्राहकों की खूब भीड़ लगी थी । मनिहारी वालों की नुमायशी चीजें शीशे की आलमारियों में से, लोगों को अपनी ओर खींच रही थीं और बिजली के तारों पर कई कबूतर आपस में लड़-झगड़ रहे थे, पर उस्ताद मंगू के लिए इन तमाम चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी ।...

वह नए कानून को देखना चाहता था, ठीक उसी तरह, जिस तरह कि वह अपने घोड़े को देख रहा था ।

जब उस्ताद मंगू के घर बच्चा पैदा होने वाला था तो उसने चार-पाँच महीने बड़ी बेचैनी से गुजारे थे । उसको विश्वास था कि बच्चा किसी-न-किसी दिन जरूर पैदा होगा । पर वह इंतजार की घड़ियाँ नहीं काट सकता था । वह चाहता था कि अपने बच्चे को सिर्फ एक नजर देख ले । इसके बाद वह पैदा होता रहे । चुनांचे इसी गैर-मगलूब इच्छा के तहत उसने कई बार अपनी बीवी के पेट को दबा-दबा कर और उसके ऊपर कान रख-रख कर, अपने बच्चे के बारे में कुछ जानना चाहा था । पर वह नाकाम रहा था । एक बार तो वह इंतजार करते-करते इतना तंग आ गया कि अपनी बीवी पर बरस भी पड़ा था – 'तू हर वक्त मुर्दे की तरह पड़ी रहती है । उठ, और जरा चल-फिर ! तेरे अंगों में थोड़ी-सी ताकत तो आए । यों तख्ता बने रहने से कुछ न होगा । तू समझती है कि इस तरह लेटे-लेटे बच्चा जन देगी ?'

उस्ताद मंगू तबियत से बहुत जल्दबाज था । वह हर चीज का असली रूप देखने के लिए, न सिर्फ इच्छुक था, बल्कि उसे खोजता भी रहता था । उसकी बीवी, गंगादेई उसकी इस किस्म की बेकरारियों को देख कर आम तौर पर यह कहा करती थी –'अभी कुआँ खोदा ही नहीं गया और तुम प्यास से बेहाल हो रहे हो ।'

कुछ भी हो, पर उस्ताद मंगू नए कानून के इंतजार में इतना बेचैन नहीं था, जितना कि उसे अपनी तबियत के लिहाज से होना चाहिए था । वह आज नए कानून को देखने के लिए घर से निकला था; ठीक उसी तरह, जैसे वह गाँधी या जवाहरलाल के जुलूस को देखने के लिए निकलता था ।

नेताओं की महानता का अनुमान उस्ताद मंगू हमेशा उनके जुलूस के हंगामों और उनके गले में डाली हुई फूलों की मालाओं से किया करता था । अगर कोई लीडर गेंदे के फूलों से लदा हो तो उस्ताद मंगू के नजदीक वह बड़ा आदमी था और जिस नेता के जुलूस में भीड़ की वजह से दो-तीन दंगे होते-होते रह जाते, वह उसकी नजर में और भी बड़ा था । अब नए कानून को वह अपने जेहन के इसी तराजू में तौलना चाहता था ।

अनारकली से निकल कर वह माल रोड की चमकीली सड़क पर अपने ताँगे को धीरे-धीरे चला रहा था कि मोटरों की दुकान के पास उसे छावनी की एक सवारी मिल गई । किराया तय करने के बाद उसने अपने घोड़े को चाबुक दिखाया और मन में सोचा–'चलो यह भी अच्छा हुआ ।....शायद छावनी से ही नए कानून का कुछ पता चल जाए ।'

छावनी पहुँच कर उस्ताद मंगू ने सवारी को उसकी मंजिल पर उतार दिया और जेब से सिगरेट निकाल कर, बाएँ हाथ की आखिरी दो उँगलियों में दबा कर सुलगाया और पिछली सीट

के गद्दे पर बैठ गया ।

जब उस्ताद मंगू को किसी सवारी की तलाश नहीं होती थी या उसे किसी बीती हुई घटना पर गौर करना होता तो वह आम तौर पर अगली सीट छोड़कर पिछली सीट पर बैठ जाता और बड़े इत्मीनान से अपने घोड़े की लगामें दाएँ हाथ के गिर्द लपेट लिया करता था । ऐसे अवसरों पर उसका घोड़ा थोड़ा-सा हिनहिनाने के बाद बड़ी धीमी चाल चलना शुरू कर देता था, मानो उसे कुछ देर के लिए भाग-दौड़ से छुट्टी मिल गई हो ।

घोड़े की चाल और उस्ताद मंगू के दिमाग में ख्यालों की आमद बहुत सुस्त थी; जिस तरह घोड़ा धीरे-धीरे कदम उठा रहा था, उसी तरह उस्ताद मंगू के जेहन में नए कानून के बारे में नए अनुमान दाखिल हो रहे थे ।

वह नए कानून के आने पर म्युनिसिपल कमेटी से ताँगों के नंबर मिलने के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौरतलब बात को नए विधान की रोशनी में देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार में डूबा था, जब उसे ऐसा लगा, जैसे किसी सवारी ने उसे बुलाया है । पीछे पलट कर देखने पर उसे सड़क के उस पार, दूर बिजली के खंभे के पास, एक गोरा खड़ा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था ।

जैसा कि कहा जा चुका है, उस्ताद मंगू को गोरों से बेहद नफरत थी । जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे के रूप में देखा तो उसके मन में नफरत के भाव जाग उठे । पहले तो उसके जी में आया कि बिलकुल ध्यान न दे और उसको छोड़ कर चला जाए, पर बाद में उसको ख्याल आया कि इनके पैसे छोड़ना भी बेवकूफी है । कलगी पर जो मुफ्त में साढ़े चौदह आने खर्च कर दिए हैं, इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए । चलो चलते हैं ।

खाली सड़क पर बड़ी सफाई से ताँगा मोड़ कर, उसने घोड़े को चाबुक दिखलाया और पलक झपकते ही वह बिजली के खंभे के पास पहुँच गया । घोड़े की लगाम खींच कर उसने ताँगा ठहराया और पिछली सीट पर बैठे-बैठे, गोरे से पूछा – 'साहब बहादुर, कहाँ जाना माँगता है ?'

इस सवाल में गजब का तंजियां (व्यंग्य भरा) अंदाज था । 'साहब बहादुर' कहते समय, उसका ऊपर का मूँछों भरा होंठ, नीचे की ओर खिंच गया और पास ही गाल की इस तरफ जो मद्धिम-सी लकीर, नाक के नथुने से ठोड़ी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कँपकँपी के साथ गहरी हो गई, जैसे किसी ने नुकीले चाकू से शीशम की साँवली लकड़ी में धार-सी डाल दी हो । उसका सारा चेहरा हँस रहा था और अपने अंदर उसने उस गोरे को सीने की आग में जला कर राख कर डाला था ।

जब गोरे ने, जो बिजली के खंभे की ओट में हवा का रुख बचा कर सिगरेट सुलगा रहा

था, मुड़ कर ताँगे के पायदान की तरफ कदम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मंगू की और उसकी निगाहें चार हुई और ऐसा लगा कि एक साथ आमने-सामने की बंदूकों से गोलियाँ निकलीं और आपस में टकरा कर, आग का एक बगूला बन कर, ऊपर को उड़ गईं ।

उस्ताद मंगू, जो अपने दाएँ हाथ से लगाम के बल खोल कर ताँगे से नीचे उतरने वाला था, अपने सामने खड़े गोरे को यों देख रहा था, जैसे वह उसके वजूद के जर्रे-जर्रे को अपनी निगाहों से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी पतलून पर से अनदेखी चीजें झाड़ रहा था, जैसे वह उस्ताद मंगू के इस हमले से अपने वजूद के कुछ हिस्से बचा लेने की कोशिश कर रहा हो ।

गोरे ने सिगरेट का धुआँ निगलते हुए कहा–'जाना माँगटा या फिर गड़बड़ करेगा ?'

'वही है ।' ये शब्द उस्ताद मंगू के दिमाग में पैदा हुए और उसकी चौड़ी छाती के अंदर नाचने लगे । 'वही है ।' उसने ये शब्द अपने मुँह के अंदर दोहराए और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा, जो उसके सामने खड़ा था, वही है, जिससे पिछले बरस उसकी झड़प हुई थी और उस खाह-म-खाह के झगड़े में, जिसकी वजह गोरे के दिमाग में चढ़ी हुई शराब थी, उसे लाचार हो कर बहुत-सी बातें सहनी पड़ी थीं । उस्ताद मंगू ने गोरे का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उड़ा दिए होते, पर वह किसी खास कारण से चुप हो गया था । उसको पता था, इस तरह के झगड़ों में अदालत का नजला आम तौर पर कोचवानों पर ही गिरता है ।

उस्ताद मंगू ने पिछले बरस की लड़ाई और पहली अप्रैल के नए कानून पर गौर करते हुए, गोरे से पूछा–'कहाँ जाना माँगटा है ?' उस्ताद मंगू के लहजे में चाबुक-ऐसी तेजी थी ।

गोरे ने जवाब दिया–'हीरा मंडी ।'

'किराया पाँच रुपए होगा ।' उस्ताद मंगू की मूँछें थरथराई ।

यह सुन कर गोरा हैरान हो गया । वह चिल्लाया–'पाँच रुपए । क्या टुम.....?'

'हाँ-हाँ पाँच रुपए ।' यह कहते हुए उस्ताद मंगू के बालों-भरे दाहिने हाथ ने भिंच कर एक भारी घूँसे का रूप ले लिया । 'क्यों, जाते हो या बेकार बातें बनाओगे', उस्ताद मंगू का लहजा और भी ज्यादा सख्त हो गया ।

गोरा पिछले वर्ष की घटना का ख्याल कर के, उस्ताद मंगू के सीने की चौड़ाई नजरअंदाज कर चुका था । वह सोच रहा था–इसकी खोपड़ी फिर खुजला रही है । हौसला बढ़ाने वाले इस ख्याल के तहत, वह ताँगे की ओर अकड़ कर बढ़ा और अपनी छड़ी से उसने उस्ताद मंगू को ताँगे से नीचे उतरने का इशारा किया ।

बेंत की वह पालिश की हुई, पतली-सी छड़ी, उस्ताद मंगू की मोटी रान के साथ दो-तीन बार छुई । उसने बड़े नाटे कद के गोरे को ऊपर से नीचे देखा, जैसे वह अपनी निगाहों के भार

से ही उसे पीस डालना चाहता हो । फिर उसका घूँसा, कमान में तीर की तरह ऊपर को उठा और पलक झपकते ही गोरे की ठोड़ी के नीचे जम गया । धक्का देकर उसने गोरे को परे हटाया और नीचे उतर कर उसे धड़ाधड़ पीटना शुरू कर दिया ।

गोरा हक्का-बक्का रह गया और उसने इधर-उधर सिमट कर, उस्ताद मंगू के वजनी घूँसों से बचने की कोशिश की और जब देखा कि उस्ताद मंगू की हालत पागलों-सी हो गई है और उसकी आँखों से अंगारे बरस रहे हैं तो उसने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया । उस चीख-पुकार ने उस्ताद मंगू की बाँहों का काम और भी तेज कर दिया । वह गोरे को जी भर के पीट रहा था और साथ-साथ यह भी कहता जाता था – 'पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फूँ.....पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फूँ.....अब हमारा राज है बच्चा ।'

लोग जमा हो गए और पुलिस के दो सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से गोरे को उस्ताद मंगू की पकड़ से छुड़ाया । उस्ताद मंगू उन दो सिपाहियों के बीच खड़ा था । उसकी चौड़ी छाती, फूली हुई साँस की वजह से ऊपर-नीचे हो रही थी । मुँह से झाग बह रहा था और अपनी मुस्कराती हुई आँखों से हैरत-जदा भीड़ की तरफ देख कर, वह हाँफती हुई आवाज में क़ह रहा था – 'वो दिन गुजर गए, जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाया करते थे ।.....अब नया कानून है मियाँ, नया कानून ।'

और बेचारा गोरा अपने बिगड़े हुए चेहरे के साथ, बेवकूफों की तरह, कभी उस्ताद मंगू की तरफ देखता और कभी भीड़ की तरफ Ihttps://www.evidyarthi.in/

उस्ताद मंगू को पुलिस के सिपाही थाने में ले गए । रास्ते में और थाने के अंदर कमरे में वह 'नया कानून, नया कानून' चिल्लाता रहा, पर किसी ने एक न सुनी ।

'नया क़ानून, नया कानून क्या बक रहे हो ! ....कानून वही है–पुराना !' और उसको हवालात में बंद कर दिया गया ।